शासन पद्धति

नहजुल बलाग़ा से उद्धृत

उर्दू अनुवादक : आयतुल्लाह सै० काज़िम नक़वी साहब क़िब्ला, अलीगढ़
हिन्दी अनुवादक : जनाब जौनुल हसन सौराहवीं इलाहाबादी

क़िस्त : 2

सेना के असरदारो में तुम्हें सबसे अधिक पसन्द वह होना चाहिए जो उन सिपाहियों के साथ अपनी मदद और सहयोग में हमदर्दी करें और अपने निजी रुपये में से उन पर एहसान करे और सिपाहियों का वेतन इतना होना चाहिए कि वह उनके लिए और उनके परिवार के लिए जो उन्होंने अपने घरों में छोड़ दिये हैं काफ़ी हो ताकि उनको एकाग्र मन के साथ केवल दुश्मन से युद्ध की चिन्ता बनी रहे। इसलिए कि तुम्हारी मेहरबानी उनके दिलों को तुम्हारी ओर मोड़ देगी और उनके प्रेम का प्रमाण यह हो सकता है कि वह अपने हाकिमों की रक्षा के लिए तत्पर रहें और उनकी प्रभुता को भार न समझें और इसकी दुआयें न मांगे कि यह हुकूमत शीघ्र समाप्त हो जाये। इसलिए तुम्हारा कर्तव्य है कि उनकी आशाओं को बढ़ाओ और उनके अच्छे कामों की प्रशंसा करते रहो और जो बड़ा काम कोई करे तो उसकी सराहना करो इसलिए कि उनके अच्छे कामों की प्रशंसा ही बहादुरों को जोश दिलायेगी और कमज़ोरों में हिम्मत पैदा करेगा। फिर जो व्यक्ति जो कोई बड़ा काम करे उसको पहचानते रहो और एक के काम का सेहरा दूसरे के सर न बाँधो और न उनके कामों की सीमा से कम प्रशंसा करो।

देखो कभी किसी बड़े आदमी के छोटे काम को बड़ा और छोटे आदमी के बड़े काम को छोटा न समझना और जब कोई मामला तुम्हें अपनी सामर्थ से बाहर दिखाई पड़े या तुम्हारी समझ में न आये तो उसमें अल्लाह और रसूल की ओर ध्यान फेरों क्योंकि अल्लाह ने उस क़ौम को सम्बन्धित करके जिसको सही रास्ता दिखाना मंजूर था कहा है कि ऐ ईमानदारों! अल्लाह का हुक्म मानो और उसके रसूल का हुक्म मानों और उनका जो तुम में से हुक्म देने वाले (बारह इमाम और मासूम अ०) हैं। अतः अगर तुम्हारे बीच किसी बात में झगड़ा हो तो अल्लाह और रसूल की ओर ध्यान दो।

अल्लाह की ओर ध्यान देने का मतलब यह है कि उसकी किताब कुरआन मजीद की पवित्र बातों से सीख प्राप्त की जाये और रसूल की ओर ध्यान देने का मतलब यह है कि आपके उन बचनों पर अमल किया जाये जो इस्लाम धर्म के हर सम्प्रदाय में मान्य हैं और जिनमें कोई मतभेद नहीं है।

फिर यह कि तुम उन लोगों को फ़ैसला करने के लिए चुनो जो तुम्हारे विचार में सारी जनता में सबसे बेहतर हो। वह ऐसा व्यक्ति हो जिसे मामलात की उलझन परेशानी में न डाले, आपसी झगड़ों की खींच तान दिल को दुखी न बनायें, गल्ती को बार बार न दोहरायें वह जो हक़ के पहचानने के बाद उसकी ओर से पलटने में रुके नहीं। जिसका दिल लालच के फेर में न आयें और सरसरी निगाह से विचार करने को काफ़ी न समझे बल्कि बहुत ही विचार और समझदारी से काम लें। वह जो संदेह और शंका के समय पर सतर्क रहने वाला हो और प्रमाण मिल जाने पर बड़ी पाबन्दियाँ करने वाला हो। जो किसी एक पक्ष के बार-बार के विवाद से उलझने वाला न हो और जो मामलात की जाँच करने में बड़ी कठोरता से काम लेने वाला हो लेकिन जब किसी निर्णय पर पहुँच जाये तो उस पर पूर्णतया अटल रहे। वह ऐसा हो जिसकी प्रशंसा उसको धोखे मे न डाले और तानना जोश में न लाये। समझ लो कि इन गुणों के आदमी कम

हुआ करते हैं।

इसके बाद भी उनके फ़ैसलों की ख़ुद देखभाल करते रहा करो और उनकी तन्ख़्वाह इतनी रखो कि जो उनकी आवश्यकता पूरी कर दे और उनको लोगों की आवश्यकता न रहे और अपनी सभा में उनको इतनी इज़्ज़त दो जिसकी राजकीय सदस्यों मे से किसी को भी अपने लिए आशा न हो सके ताकि उन्हें अपने फ़ैसलों में रु-रियायत की ज़रूरत न हो और लोगों के विरोध करने का अंदेशा न हो। इस सम्बन्ध में बड़े सोच विचार से काम लो क्योंकि यह धर्म इसके पहले उद्दण्ड लोगों के हाथ में क़ैद था जिसमें कामुक भावनाओं के अनुसार कार्यवाही होती थीं और उसके द्वारा दुनिया को हासिल किया जाता था। फिर अपनी ओर से हाकिमों के बारे में विचार करो। उनको सदैव परीक्षा हेतु काम सौंपो ओर पक्षपात अथवा रियायत से नौकरियाँ न दो क्योंकि यह दोनों बातें अत्याचार और माल खो जाने का स्रोत हैं और उन हाकिमों में ऐसे लोगों को महत्व देना चाहिए जो अनुभवी और शरीफ़ घराने के लोग हों, जिनके परिवार के लोगों ने इस्लाम की सेवा से नाम कमाया हो क्योंकि ऐसे लोग नैतिक बातों में उच्च और सम्मान तथा प्रतिष्ठा के मामलों मो पाक दामन होंगे और लालच के फेर में कम पड़ने वाले ओर कार्यों के परिणाम पर अधिक निगाह रखने वाले होंगे। फिर उनके वेतन काफ़ी मात्रा में रखो ताकि वह उनकी आवश्यकताओं को पूरा कर सके और वह उन अमानतों के उपयोग से जो उनके कब्ज़े में है बेपरवाह रहें और उनके बारे मे तुम्हारी पोज़ीशन साफ़ रहे उस परिस्थिति में जब कि वह आज्ञा पालन न करें या बेईमानी से काम लें।

फिर उनकी हालत की देखभाल करते रहो और अपने वफ़ादार और ईमानदार जासूस उनपर मुक़र्रर करो इसलिए कि गुप्त रूप से कामों की देखभाल उनको प्रेरित करेगी कि वह अमानती और जनता के साथ मेहरबानी और भलाई के साथ पेश आयें। अब अगर उन हाकिमों में से किसी ने बेईमानी की ओर हाथ बढ़ाया जिसके बारे में तुम्हारे जासूसों की खबरें आयें तो बस प्रमाण के लिये उसको काफ़ी समझों और उसको शारीरिक दण्ड देने के अलावा उस रुपये को वसूल करो जो वह खा गया है। फिर उसको ज़िल्लत के स्थान पर खड़ा कर दो और बद दयानती (बेईमानी) का निशान उस पर लगा दो और उसकी गर्दन में माल के खा जाने के ऐब का तौक डाल दो।

तुमको मालगुज़ारी के मामले में भी समझदारी से काम लेना है। इस प्रकार कि माल गुज़ारी देने वालों के हमेशा के लिए फ़ायदे की बात भी ध्यान में रहे कि इस वर्ग के लोगों की ख़ुशहाली से सारी जनता की ख़ुशहाली है और दूसरे लोगों की भलाई हो नहीं सकती जब तक कि इनकी भलाई का बंदोबस्त न हो। ज़मीन की आबादी की चिंता तुम्हें माल गुज़ारी के वसूल करने से ज़्यादा रहना चाहिए इसलिए कि जिसने माल गुज़ारी को बिना आबादी के प्राप्त करना चाहा उसने देश को बर्बाद और खुदा के बंदों को तबाह कर दिया और उसकी प्रभुता भी बाकी नहीं रह सकती।

अगर वह जज़िया अदा करने वाले किसी असाधारण परेशानी का या किसी बीमारी या वर्षा के न होने या किसी स्रोत के बर्बाद हो जाने या ज़मीन के ख़राब हो जाने की बात करें या कहें कि बाढ़ आ जाने के कारण नुकसान हो गया तो तुमको चाहिए कि इतनी कमी कर दो जिससे कि मामलात की दुरुस्ती की उम्मीद हो सके और जो कुछ कमी करो वह तुम्हारी तबीयत पर भार न होना चाहिए क्योंकि (तुम्हारा यह काम बेकार न सिध्द होगा बल्कि) यह तुम्हारा एक कोष है जो उनके पास सुरक्षित है जिनके कारण आईन्दा वह तुम्हारे शहर की आबादी की वृध्दि और तुम्हारे राजय की शोभा का कारण होंगे। फिर यह कि तुम्हारी प्रशंसा भी उनकी ज़बान पर होगी और तुम्हारी अर्न्तात्मा भी खुश होगी कि तुमने उनके साथ न्याय और भलाई का काम किया और फिर तुम्हें विश्वास रखने का हक़ होगा। अपने उस एहसान के कारण जो तुमने उनके पास अमानत के तौर पर रख छोड़ा है वह ज़रूरत के समय अपनी शक्ति का प्रयोग तुम्हारी सहायता करने में करें और तुमको उन पर भरोसा हो सके कि तुम उनके साथ नर्मी और इन्साफ़ ही से हमेशा पेश आओगे। इसके बाद मुमकिन है ऐसी असाधारण परिस्थितियाँ पैदा हो जायें कि तुम्हें उन पर कुछ ज़्यादा भार डालना हो तो वह उसको खुले

दिल से बर्दाश्त कर लेगें क्योंकि जब देश आबाद है तो हर उस वस्तु का जिसका बोझ तुम डालो, बर्दाश्त कर सकता है।

भूमि की ख़राबी का कारण उस पर कृषि करने वालों की आर्थिक दुर्दशा हुआ करती है और उनकी यह शोकनीय दशा उस समय होती है जब हाकिमों को माल जमा करने की सीमा से अधिक हवस हो जाये और अपनी प्रभुता को बाक़ी रहने का उन्हें इत्मिनान न हो और अनुभवों से कम सीख प्राप्त करें। फिर इसके बाद यह कि कार्यालयों के कर्मचारियों की ओर ध्यान दो। अपने मुख्य कामों का ज़िम्मेदार उसको बनाओ जो उनमें सबसे बेहतर हो और अपने उन पत्रों को जिनमें तुम्हारी राजनीति और भेद की बातें लिखी हों विशेषकर उस आदमी को जो उन सब लोगों में अच्छी नैतिकता का सबसे अधिक भागी हो, जिसको अधिक सम्मानित होने पर ऐसा घमण्डी न बना दे कि वह सभा में तुम्हारा विरोध का साहस कर सके और ऐसा लापरवाह न हो कि तुम्हारे मनोनीत हाकिमों आदि के पत्र तुम्हारे सामने पेश करने और उनके उचित उत्तर देने में कमी करे और तुम्हारी ओर से जो समझौते करे या दूसरों से जो समझौते लें उनमें भी उचित ढंग से काम को निगाह मे रखे और समझौते की किसी शर्त में कोई कमज़ोरी न रहने दे और जो राजनीतिक दाँव पेंच दूसरे करें तो उनके तोड़ से अपने को मजबूर न बना ले और उसे स्वयं अपने व्यक्तित्व के गुणों का पूरा अन्दाज़ा होना चाहिए इसलिए कि जो स्वयं अपने को पहचान न सकता हो वह दूसरे के मूल्य का अंदाज़ा भी नहीं कर सकता। फिर उनका चुनाव तुमको अपनी निजी राय और इत्मिनान के अन्तर्गत न करना चाहिए इसलिए कि लोग हाकिमों के ख़्यालात को अपनी ओर अच्छा बनाने के लिए बनावट और उनकी सेवाऐं करके काम निकालते हैं हाँलाकि उनके दिल में सफ़ाई और ईमानदारी का थोड़ा सा अंश भी नहीं होता लेकिन तुम उनको चुनो उस अनुभव के आधर पर जो उनके संबन्ध में हो चुका हो तुम्हारे पहले अच्छे हाकिमों की ओर से नियुक्त हो चुकने की हालात में। फिर उनमें से जो जनसाधारण में अधिक नेक नाम हो, अमानत और ईमानदारी में ज़्यादा मशहूर हो उसे विशेषतया चुनो। ऐसा करना उसके साथ भलाई, ईमान और अपने से बड़े हाकिम (बादशाह) के साथ तुम्हारी ख़ैरख़्वाही का सुबूत होगा और तुमको चाहिए कि हर काम का एक-एक आदमी ज़िम्मेदार बना दो जो उस विभाग के बड़े से बड़े काम से अपने को मजबूर न समझे और इस सिलसिले में विभिन्न उत्तरदायित्वों का इकट्ठा हो जाना उसे परेशान न बना सके और याद रखो कि जो कुछ तुम्हारे कार्यालय के कर्मचारियों मे ऐब होगा और तुम जान बूझ कर उसकी अवहेलना करोगे तो उसके उत्तरदायी तुम समझे जाओगे।

तुम्हारे लिये अनिवार्य है कि तुम व्यापारियों और दस्तकारों का लिहाज़ रखो और उनसे नेकी और अच्छाई का बर्ताव करो चाहे वह व्यापारी एक स्थान पर रहकर व्यापार करने वाला हो या फेरी लगाने वाला हो या ऐसा मज़दूर हो जो शारीरिक परिश्रम से पैसा कमाता हो। बहरहाल यह सब मुनाफ़े के स्रोत और लाभ के तत्व हैं। और दूर दूर से ख़ुश्की और तरी, रेगिस्तानों और पहाड़ी इलाकों से वह जीवन सामग्री को खींच लाने वाले हैं और जहाँ जाने की हर व्यक्ति की हिम्मत नहीं है। यह लोग सुलह पसन्द हुआ करते हैं जिनसे ख़तरे का अंदेशा नहीं। इनकी तुमको देख-भाल रखनी चाहिए ये चाहे तुम्हारी राजधानी में हों और चाहे तुम्हारे राज्य के आस-पास फैल चुके हों।

इसके साथ साथ यह भी याद रखो कि इनमें से बहुत लोगों में बड़ी संकीर्णता और घृणा पूर्ण कंजूसी और नफ़ाख़ोरी की उम्मीद में माल को संचित कर रखना और विक्रय में बहुत अधिक लाभ प्राप्त करने की कोशिश मौजूद होती है और यह एक ऐसी वस्तु है जिससे जनता को हानि पहुँती है और हाकिमों की बदनामी होती है। अतः ग़ल्ले को मुनाफ़ा हेतु संचित रखने से मना करो इसलिए कि रसूले ख़ुदा ने इसके लिए मना किया है बल्कि बिक्री सही तौल, इंसाफ, ईमानदारी और खुले दिल से होनी चाहिए ऐसे भावों के साथ जिसमें क्रेता तथा विक्रेता दोनों में से किसी को नुकसान न हो। फिर अगर कोई तुम्हारे मना करने के बाद गल्ले को रोके तो उचित

मात्रा में सज़ा दो।

इनके बाद बहुत अधिक निम्न स्तर के लोगों का ध्यान रखना भी आवश्यक है इसलिए कि यह वह लोग हैं जिनके पास कोई जीवन उपाय और साधन नहीं है। ये मुहताज, निर्धन, ग़रीब और फ़ाक़े में मस्त और मजबूर लोग हैं। इन लोगों में ऐसे भी होते हैं जो अपने हाल में संतोष रखने वाले हैं और ऐसे भी हैं जो भीख मांगने लगते हैं और अल्लाह के लिए रक्षा करो उसके अधिकार की जो उन लोगों के बारे में है और उनके लिए ख़ज़ाने का एक भाग निश्चित कर दो और एक भाग अपने देश के पाक गल्लों में से निश्चित करो। इस भाग में दूर और नज़दीक के लोगों के साथ समानता होनी चाहिए क्योंकि तुम्हारा उनमें से प्रत्येक के अधिकार का ख़्याल रखना कर्तव्य है। तुमको हुकूमत का गुरूर उनकी ओर से बेपरवाही में न डाल दे इसलिए कि तुमको मामूली से भी काम को न करने के मामले में मजबूर न समझा जायेगा। अतः तुमको उनकी ओर ध्यान देने में कमी न करना चाहिए और उनकी ओर मुँह फेरना उचित नहीं है।

विशेषकर उन लोगों के कामों की देखभाल रखो जिनकी पंहुच तुम तक मुशकिल है, जिन पर निगाहें ज़िल्लत के साथ पड़ती है और लोग तुच्छ समझते हैं। तुमको चाहिए कि उनकी देखभाल के लिए एक उदार ईमानदार और परहेज़गार आदमी अपने खास आदमियों में से नियुक्त कर दो। वह उनके मामलात को तुम तक पहुँचाये। फिर तुम उनके साथ सुलूक करो ऐसा जो अल्लाह के यहाँ तुम्हारी ओर से जवाब देने के अवसर पर पेश किया जाये क्योंकि यह लोग दूसरों से ज़्यादा इंसाफ़ और सद्व्यवहार के मुहताज हैं और यूं तो फिर हर एक के हक़ अदा करने में तुम्हें अल्लाह के सामने अपने को बेगुनाह रखना ही है।

यतीमों तथा वृद्धावस्था के लोगों का भी ख़्याल रखो। उनकी ज़िन्दगी का कोई सहारा नहीं जो सवाल नहीं किया करते। उनके साथ मेहरबानी और देखरेख का इन्तिज़ाम वास्तव में हाकिमों के लिए बड़ी बुरी चीज़ सिद्ध होगी लेकिन सच्ची बात तो हर एक ही को बुरी मालूम होती है और कुछ नेक बन्दों की तबीयत पर अल्लाह इन बातों को आसान भी कर देता है जो क़यामत के दिन अपनी नजात (मुक्ति) चाहते हों तो वह दुखों और मुसीबतों को बर्दाश्त करते हैं और वह संतुष्ट है कि अल्लाह ने उनसे निजात (मुक्ति) के वादे किये हैं वह पूरे होकर रहेंगे। ✦✦✦

पेज न0 6 का बकिया

जबकि कहने वाला उसे इस इक़रार के साथ कहता हो कि वह खुदा को एक नही जानता बल्कि बहाने या बात बनाने से काम लेता हो।

इसी वजह से अहले सुन्नत का अशअरी सम्प्रदाय खुदा के गुणों को उससे अलग मानने के बाद भी मुसलमानों की पंक्ति (Ranks) में रहा और खुदा को देखने को मान कर मुजस्समे सगुण साकार मानने वालों में दाख़िल नहीं हुआ हालॉकि यह ज़ाहिर है कि आठ अनादि गुण ज़ात से अलग होने के बाद अल्लाह एक नहीं रहा और दर्शन के क़ाबिल होने के साथ जगह आयतन, और दिशा से स्वतन्त्र नहीं रह सकता और शरीर बन जाता है। मगर यह लोग उन जुड़ी बातों से नहीं हैं, कहिए कि खुदा को एक नही मानते? तो वे कानों पर हाथ रखेंगे, और कहिए कि तुम खुदा को साकार मानते हो तो वह इनकार करेंगे। इस लिये अ़क़ली हैसियत से वह एक मूर्खता के मुर्तकिब हों, मगर धर्मशास्त्र के हिसाब से काफ़िर नही ठहर सकते। क़ादियानी जमाअ़त में वह लोग जो मिर्ज़ा गुलाम अहमद को साफ़ साफ़ नबी कहते हों बज़ाहिर इस्लाम से ख़ारिज हैं। मगर अहमदी कि जो मुहम्मद अली साहेब के मानने वाले हैं और मिर्ज़ा गुलाम अहमद को नबी या रसूल नही मानते,सिर्फ़ एक मुजददिद (नूतनकारी) की हैसियत को मानते हैं उनके इस्लाम से ख़ारिज होने का कोई करण नहीं है।

(जारी...............)